शोध मंथन Vol. XV No.III July.-Sept. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

शिक्षार्थी विकास के पक्षों एवं गुणों के सन्दर्भ में संविधान, आयोगों, नीतियों तथा आधुनिक कालीन चौदह संत–शिक्षाविदों के विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 02.08.2024
स्वीकृतः 16.09.2024

56

डॉ0 मणि जोशी
एसोसिएट प्रोफेसर (बी0एड0)
श्री जय नारायन मिश्र पी0जी0 कॉलेज
(के0के0सी0) लखनऊ
ईमेलः *manijoshi9@yahoo.in*

सारांश

अनादि काल से समाज तथा राष्ट्र अपने नागरिकों को शिक्षित एवं दीक्षित करके स्वयं को विवेक–सम्मत समाज बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत रहा है। यदि प्रगतिशील राष्ट्रों ने शिक्षा के माध्यम से अनेक प्रश्नों को सुलझाया है तो हमारी शिक्षा ऐसा क्यों नहीं कर पा रही है? राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षाविदों ने अनेक प्रयास किये हैं किन्तु शिक्षार्थी कैसा हो, उसमे क्या गुण होने आवश्यक हैं, इस प्रश्न के सटीक उत्तर की खोज अभी पूर्ण नहीं हुई है। कम्प्यूटर व तकनीकी के इस युग में शिक्षार्थी को समय के साथ परिवर्तनशील होना आवश्यक है परन्तु साथ ही उसे अपने देश की मूल जड़ों से जुड़े रहना भी उतना ही आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन इन्ही सन्दर्भों की दिशा में एक प्रयास है।

मुख्य बिन्दु

शिक्षार्थी, शिक्षा आयोग, शिक्षा नीति, संविधान, संत–शिक्षाविद

प्रस्तावना

कम्प्युटर व तकनीकी के इस युग में शिक्षार्थी कैसा हो, उसके विकास का स्वरूप कैसा हो, यह अवधारणा निश्चय ही भ्रमपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा प्रक्रिया के त्रिकोण में शिक्षार्थी एक महत्वपूर्ण घटक है जो पाठ्यक्रम के माध्यम से ज्ञान गंगा में स्नान करता है व शुद्ध ज्ञान को अर्जित करता है ताकि वह राष्ट्र के सपनों को सम्पूर्णता प्रदान करने में, राष्ट्र के विकास व राष्ट्र की उत्पादकता में सकारात्मक योगदान प्रदान कर सके तथा राष्ट्रहितों के प्रति सजग रह सके। इस प्रकार का गुणी शिक्षार्थी ही देश के उज्ज्वल भविष्य को सही दिशा व दशा प्रदान कर सकता है। शिक्षार्थी शिक्षक के अर्न्तमन का मूर्ति प्रतिरूप है। अतः आज ऐसे प्रतिभावान, प्रबुद्ध शिक्षार्थी की आवश्यकता है जो 21वीं शताब्दी के तीव्र गति से बदलते समाज में अपने आप को समायोजित कर सके, आने वाले दिनों में समाज की आवश्यकताओं व समस्याओं को भली प्रकार समझकर सुलझा सके व सुख तथा आनन्द के साथ जीवन यापन कर सके।

भारतीय समाज की अंतरात्मा कहे जाने वाले चौदह सन्त शिक्षाविदों – दयानन्द सरस्वती (1824), एनी बेसेन्ट (1847), भगिनी निवेदिता (1857), महर्शि कर्वे (1858), स्वामी विवेकानन्द (1863), अरबिंदो घोष (1872), विनोबा भावे (1885), स्वामी शिवानन्द (1887), जिद्दू कृष्णमूर्ति (1895), श्रीला प्रभुपाद स्वामी (1896), स्वामी चिद्भवानन्द (1898), महर्षि महेश योगी (1915), प्रेम सत्य साईं (1926) एवं आचार्य रजनीश (1931) द्वारा प्रतिपादित शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों का सामुहिक एवं तुलनात्मक अध्ययन किया गया एवं इस चिंतन की उपादेयता व उपयोगिता इस बात से मापी गयी कि संविधान और विभिन्न शिक्षा आयोगों, नीतियों एवं प्रतिवेदनों के प्रकाश में इनका चिंतन करना कितना ग्राह्य हो सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

शिक्षार्थी विकास के पक्षों एवं गुणों के सन्दर्भ में संविधान, आयोगों, नीतियों तथा आधुनिक कालीन चौदह संत–शिक्षाविदों के विचारों का विश्लेशणात्मक अध्ययन।

विधि एवं विधान

इस शोध के लिए दार्शनिक, तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक विधि अपनायी गयी। प्रमाणों को प्राथमिक एवं गौण स्त्रोतों से एकत्र किया गया। विषयवस्तु का विश्लेषण मूल ग्रन्थों, प्रतिवेदनों, पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों, आख्यान–व्याख्यानों, जीवन वृत्तों एवं आत्मकथाओं का पर्यावलोकन कर किया गया एवं निष्कर्ष निकाले गयें।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

संविधान, शिक्षा आयोगों, नीतियों, प्रतिवेदनों व आधुनिक–कालीन 14 संत शिक्षाविदों द्वारा प्रतिपादित तथ्यों के आधार पर शिक्षार्थी के अधिकारों, विकास के विभिन्न पक्षों व व्यक्तित्व के गुणों की विवेचना को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकष्त किया जा सकता है।

संविधान

संविधान में शिक्षार्थी के शिक्षा के संदर्भ में प्रजातंत्र की दृष्टि से तो विचार प्रकट किये गये हैं किन्तु शिक्षार्थी के विकास व गुणों आदि के विषय में कोई स्पष्ट उल्लेख नही है।

भारतीय संविधान में शिक्षा संबन्धी प्रमुख प्रावधान

1. धारा–45 : राज्य इस संविधान के प्रारम्भ से दस वर्ष की अवधि के भीतर सभी छात्रों को 14 वर्ष की आयु पूरी करने तक निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने के लिए उपबंध करने का प्रयास करेगा।

2. धारा–15, 17, 46ः अनुसूचित जाति, जनजाति तथा दुर्बल वर्ग के बच्चों के शैक्षिक तथा आर्थिक हितों को बढ़ाना।

3. धारा–21 (ए) : शिक्षा का अधिकार।

शिक्षा आयोगों, राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों तथा प्रतिवेदनों में शिक्षार्थी के विकास के विभिन्न पक्षों के सन्दर्भ में प्रतिपादित संस्तुतियों का विवेचन

राधाकृष्णन कमीषन (1848–49)

राधाकृष्णन कमीशन ने विद्यार्थियों के कल्याण के लिए योजनायें प्रस्तुत की। कमीशन ने विद्यार्थियों में उपस्थित अनुशासनहीनता का समाधान खोजने तथा उनकी अन्य गतिविधियों के बारे में सुझाव दिये। इस आयोग के प्रभाव स्वरूप विष्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में छात्र कल्याण कार्यक्रम जैसे हास्टल, कैन्टीन, चिकित्सा और स्वास्थ्य सुविधायें आदि प्रारम्भ हुई। कमीशन ने प्रत्येक संस्थान में एन0सी0सी0 की स्थापना तथा छात्रों को राजनीति से दूर रखने की सिफारिश की।

मुदालियर कमीशन (1952–53)

मुदालियर कमीशन ने शिक्षार्थियों की अनुशासनहीनता इत्यादि दोषों को दूर करने के लिए उनके चारित्रिक विकास पर बल दिया। साथ ही छात्रों की शक्तियों का सदुपयोग करने तथा मानव–श्रम की व्यर्थता को बचाने के लिए मार्गदर्शन सेवायें प्रारम्भ करने का अमूल्य सुझाव दिया। कमीशन ने शिक्षार्थियों के लिए विद्यालय में स्वास्थ्य सेवा, पौष्टिक भोजन तथा शारीरिक शिक्षा की व्यवस्था पर जोर दिया।

कोठारी कमीशन (1964–66)

कोठारी कमीशन ने विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर छात्रों की संख्यात्मक वृद्धि के लिए प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय खोलने, बालिकाओं के लिए और अधिक माध्यमिक विद्यालय, छात्रावास व छात्रवृत्तियां तथा निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने हेतु संस्तुति की। आयोग ने विश्वविद्यालय को पाठ्यक्रम निर्माण, छात्रों के चयन तथा अनुसंधान कार्य के क्षेत्र में स्वायत्तता देने की भी सिफारिश की। साथ ही आयोग द्वारा शैक्षिक अवसरों की समानता सुलभ कराने के लिए मानसिक रूप से पिछड़े और विकलांग प्रतिभावान छात्रों तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों की शिक्षा की संस्तुति की गयी। संविधान के आदेश का अनुपालन कराने हेतु 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के छात्रों की अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था की भी संस्तुति की गयी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और उसकी कार्य योजना के अन्तर्गत शिक्षार्थी के सम्बन्ध में संस्तुतियां निम्नलिखित हैः

इस नीति के चौथे भाग में घोषणा की गयी कि अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग, अल्पसंख्यक, विकलांग तथा मंद बुद्धि छात्रों की शिक्षा की विशेष व्यवस्था तथा सभी को शैक्षिक

अवसरों की समानता प्रदान की जानी चाहिए।

इस नीति के कार्य योजना दस्तावेज में तेरहवें भाग में अनुसूचित जाति, जनजाति व पिछड़े वर्ग तथा चौदहवें भाग में अल्पसंख्यकों, एवं पन्द्रहवें भाग में विकालांगों की शिक्षा व्यवस्था कराने की बात की गयी है।

संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 (1992)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के मूल तत्वों में कोई परिवर्तन नही किया गया। मूल तत्व संख्या–6 में अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य को 1995 के स्थान पर 2000 के अन्त तक प्राप्त करने की संस्तुति की गयी।

मूल तत्व संख्या–7 में यह संशोधन किया गया कि +2 पर बालिकांओं ओर अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के छात्रों को वाणिज्य, विज्ञान और व्यवसायिक धारा में लाने के लिए विशेष प्रयत्न किये जाने चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में शिक्षा के भविष्य को आकार देने के उद्देश्य से प्रमुख हाइलाइट्स और परिवर्तनकारी बदलाव लेकर आई है। यह समग्र शिक्षा, शिक्षार्थियों के बचपन की देखभाल, लचीले आकलन, कौषल विकास, प्रौद्योगिकी के एकीकरण जैसे सुझावों पर बल देती है। ये संस्तुतियाँ शिक्षार्थी–केंद्रित, समावशी और भविष्य के लिए नवचार से युक्त शिक्षा प्रणाली बनाने के लिए तैयार किए गए हैं। इन संस्तुतियों और बदलावों को अपनाकर भारत गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकेगा जो छात्रों को 21वीं सदी में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और योग्यता प्रदान करने में सहायक होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) में छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है. इस नीति के तहत छात्रों को शिक्षा प्रणाली के केंद्र में रखा गया है और उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं, रुचियों, और क्षमताओं पर ध्यान दिया गया है। इस नीति के तहत छात्रों को 21वीं सदी में कामयाब होने के लिए तैयार किये जाने की बात कही गयी है। इसके लिए, इस नीति में शिक्षार्थी के सन्दर्भ में कई तरह के बदलाव किए गए हैं –

- छात्रों के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, और शारीरिक विकास पर बल दिया गया है।
- छात्रों को आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, और समस्या–समाधान कौशल सीखने पर जोर दिया गया है।
- छात्रों को अनुकूलनीय कौशल और अवधारणाओं की गहरी समझ विकसित करने पर जोर दिया गया है।
- छात्रों की रटने की क्षमता का आकलन करने की बजाय उनकी वास्तविक समझ का आकलन करने पर ज्यादा ध्यान दिया जाएगा।
- शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए माध्यम के रूप में मातृभाषा का प्रयोग किये जाने पर बल दिया गया है।

● शिक्षार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए पाठ्यपुस्तकों में स्थानीय संदर्भों को शामिल किये जाने की बात कही गयी है ।

● छात्रों की रुचि के हिसाब से उन्हें आगे बढ़ाने पर अधिक ध्यान दिए जाने पर बल दिया गया है।

● संगीत, खेल, या कुकिंग जैसे कौशलों को विकसित करने पर जोर देने की बात कही गयी है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षार्थियों में बहु–विषयक और समग्र दृष्टिकोण को विकसित करने पर जोर देती है, जिसका अर्थ है छात्रों का सर्वांगीण विकास करना। नई नीति ने कला, मानविकी और विज्ञान को एकीकृत किया है, जिससे शिक्षा सभी प्रकार के शिक्षार्थियों लिए अधिक समावेशी और सुलभ हो गई है।

कुल मिलाकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देष्य भारत के युवाओं में भारत और इसकी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी आवश्यकताओं, अद्वितीय कलात्मक कौशलों, भाषा और ज्ञान परंपराओं व मजबूत नैतिकता का ज्ञान उत्पन्न करना है ताकि शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्म–ज्ञान, सहयोग और एकीकरण के गुणों का विकास हो सके।

आधुनिक – कालीन 14 सन्त शिक्षाविदों द्वारा शिक्षार्थी के विकास के विभिन्न पक्षों के सन्दर्भ में प्रतिपादित मत

स्वामी दयानन्द (1824)

1. शिक्षार्थी कठोर अनुशासन में रहने वाला हो।
2. गुरू के आदर्शों का पालन करने वाला हो।
3. धार्मिक, उदार, दयावान तथा भ्रम्हचर का पालन करने वाला हो।
4. स्वार्थरहित, वेदों का अध्ययन करने वाला, सांस्कृतिक रूप से विकसित तथा समय का सदुपयोग करने वाला हो।

एनी बेसेन्ट (1847)

1. छात्र शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र है, एक जीवन्त अध्यात्मिक प्रबुद्ध है, कागज का पूरा पन्ना नही।
2. छात्र के पास पुर्नजनम की यादें है तथा उसके सम्मुख अगणनीय सम्भावनाओं से परिपूर्ण भविष्य है।
3. उसके अन्दर विनम्रता, साहस, सहनशीलता, आत्मनियंत्रण, देशभक्ति की अर्न्तचेतना, समाजसेवा की भावन, अनुशासन, ब्रम्हचर्य की पूर्णता होनी चाहिए।
4. शिक्षार्थी को शारीरिक, धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा भी प्राप्त करनी चाहिए।
5. शिक्षा के अतिरिक्त शिक्षार्थी को अन्य गतिविधियों जैसे स्काउटिंग तथा गाईड, सामाजिक सेवा तथा राजनीतिक प्रशिक्षण में रूचि लेनी चाहिए।

महर्षि कर्वे (1858)

1. शिक्षा दर्शन का केन्द्र बिन्दु नारी शिक्षा एवं नारी अधिकार को बनाया जाय।
2. शिक्षार्थी को परिश्रमी, काम में मन लगाने वाला, विनम्र, स्वाभिमानी, वचन का पालक, आत्मविश्वासी एवं धैर्यवान होना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द (1863) : शिक्षार्थी को शारीरिक रूप से स्वस्थ्य, आत्मनिर्भर, सत्य की खोज करने वाला, वैचारिक, शाब्दिक तथा क्रियात्मक पवित्रता रखने वाला, अनुशासन का पालन करने वाला, इच्छाओं का त्याग करने वाला, अपनी ज्ञानेन्द्रियों और बाह्य इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाला, सहनशक्ति से पूर्ण अध्यात्मिक, ब्रह्मचर्य का पालक तथा गुरू पर विश्वास रखने वाला होना चाहिए।

भगिनी निवेदिता (1867): भगिनी निवेदिता ने शिक्षार्थी को 3 श्रेणियों में विभाजित किया है— बालक, छात्र, बालिका एवं नारी

1. बालक— बालक त्याग के नियम का पालन करे, बड़ों की बातों को उत्सुकता से ग्रहण करें तथा नायक की तरह सोचने की प्रवृत्ति वाला होना चाहिए।

2. छात्र— छात्र शिक्षा समाप्त करने के पश्चात 3 वर्ष तक ग्रामीणों को शिक्षित करें जिससे 30 वर्ष में देश के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित बना सके। वह अपने मानसिक स्तर को ऊँचा उठाये, संस्कषति का अध्ययन करें, गुरू की सेवा करे, ईमानदारी, आदर्शवाद व स्वतंत्रता के मुल्यों को ग्रहण करें।

3. बालिका एवं नारी— सभी जाति की हिन्दु लड़कियों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। स्त्री शिक्षा चरित्र का निर्माण, आत्मा व मस्तिष्क का विकास, मानवता के गुणों से परिपूर्ण, संघर्ष की प्रवित्ति से पूर्ण व मानवता का विकास करने वाली होनी चाहिए। एक महिला में समर्पित पत्नी, आदर्श गृहणी तथा निपुण माँ ये तीनों गुण होने चाहिए। भारत के आधुनिक नैतिक आदर्शों के अनुसार राष्ट्रीय एवं नागरिक कर्तव्यों की पूर्ति हेतु स्त्रियों का शिक्षित होना आवश्यक है।

अरबिन्दो घोष (1872): अरविन्दों घोष ने शिक्षा में बालक को विशेष स्थान दिया है। प्रत्येक बालक ने कल्पना शक्ति व विचारों का भण्डार है। शिक्षार्थी देशभक्त, प्रश्नकर्ता, खोजकर्ता, निरीक्षक, विश्लेषणकर्ता व सूक्ष्मदर्शी होता है। बालक में जो श्रेष्ठ है उसे बाहर आने देना चाहिए। बालका को अध्यात्मिक तथा ब्रह्चर्य का पालन करने वाला होना चाहिए। विद्यार्थी को प्रार्थना, ध्यान, स्वाध्याय तथा पूर्ण समर्पण का पालन करना चाहिए। उसे पूर्ण मानसिक एवं शारीरिक संयम का पालन करने वाला होना चाहिए।

विनोबा भावे (1885): शिक्षार्थी को ज्ञानार्जन या विद्याभ्यास करने हेतु ब्रह्मचारी होना चाहिए ताकि वह सयंम, नियम तथा सदाचार से जीवन व्यतीत करे व कर्तब्यों का पालन करे। आज का विद्यार्थी कल का जिम्मेदार नागरिक है तथा नागरिक भी शिक्षार्थी है। छात्र अपने आचार्य की मनोवैज्ञानिक व आर्थिक रूप से मन से, वाणी से व कर्म से सेवा करे। विद्यार्थी का प्रथम कर्तव्य है कि वह अपना मस्तिष्क स्वतंत्र रखे अर्थात उसका बौद्धिक चिंतन स्वतंत्र हो। उसके अन्दर आत्मनियंत्रण, सकल्प शक्ति तथा निरन्त सेवा की भावना होनी चाहिए।

स्वामी षिवानंद (1887): स्वामी शिवानन्द के अनुसार छात्रों के व्यक्तित्व में तीन प्रकार के गुणों का समावेश होना चाहिए:

1. शारीरिक गुण— स्वच्छता पर विशेष ध्यान, पाठ्य पुस्तकों तथा कॉपियों की स्वच्छता पर भी ध्यान देना चाहिए।

2. मनसिक गुण— विद्यार्थी के हस्त, हृदय तथा मस्तिष्क तीनों का समन्वित विकास होना चाहिए। उसके कठोर ब्रह्चर्य का पालन करने वाला, दष्ढ़ संकल्पी, उद्यमी प्रकषति वाला, विभिन्न परिस्थितियों

में समायोजन करने वाल, दैनिक अध्ययन के साथ–साथ कुछ निश्चित समय प्रेरणादायी तथा अध्यात्मिक साहित्य को पढ़ने वाला होना चाहिए।

3. अध्यात्मिक गुण–छात्र निःस्वार्थ सेवा की भावना से पूर्ण, निष्काम कर्म योगी, सत्यता, शुद्धता तथा कर्मठता का अनुसरण करने वाला, सुशील, सत्यवादी, धैर्यवान तथा अनुशासन प्रिय होना चाहिए। विद्यार्थी का जीवन सादा तथा उच्च विचार वाला होना चाहिए।

जे कृष्ण मूर्ति (1895): जे कृष्ण मूर्ति के अनुसार छात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व वाला, सम्य विचार वाला, सुसंस्कृत, मुक्त–चिंतक, गहराई से समझने की शक्ति रखने वाला, क्रियात्मक सृजनशीलता से परिपूर्ण, आज्ञाकारी, विद्यालय प्रेमी, राष्ट्र को नई दिशा देने वाला तथा रूढ़ियों व बुराईयों से परे होना चाहिए।

प्रभुपाद स्वामी (1896): प्रभुपाद स्वामी के अनुसार छात्र निम्न गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए–इन्द्रियों पर संयम रखने वाला, आज्ञाकारी, विनीत, सेवाभाव व अनुशासन का पालन करने वाला, अध्यात्मिक, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर बल देने वाला, ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, गुरू सेवा को महत्व देने वाला, 15 वर्ष की आयु तक विशेष अनुशासन मे ंरहने वाला, 16 वर्ष की आयु के बाद मित्रवत व्यवहार करने वाला तथा कृष्ण चेतना से परिपूर्ण होना चाहिए।

स्वामी चिद्भवानन्द (1898): स्वामी चिद्भवानन्द के अनुसार शिक्षार्थी आज्ञाकारी, मानवता प्रेमी, आदरभावी, आत्मनियंत्रक, आत्मानुभूति से परिपूर्ण, इन्द्रिय संयमी, संतुलित भोजन करने वाला, व्रत रखने वाला, संगीत प्रेमी इत्र का प्रयोग न करने वाला, परसेवी, एकाग्र बुद्धि वाला, विनम्र, गायत्री मंत्र का उपासक, शुद्ध प्रेम से पूर्ण, चरित्रवान, अनुशासन प्रिय, प्रातःकाल उठने वाला, मातृ देवो भव–पितृ देवो भव का पालन करने वाला, साहसी तथा तप करने वाला होना चाहिए।

महर्षि महेश (1915): महर्षि महेश के अनुसार शिक्षार्थी ध्यान योग द्वारा रचनात्मक जागृति पर बल देने वाला, मौलिक बुद्धि वाला, समस्या समाधान की योग्यता से पूर्ण तथा आचरण में सुधार करने वाला होना चाहिए।

श्री सत्य साईं (1926): प्रेम सत्य साईं ने छात्र का वर्गीकरण तीन प्रकार से किया हैः

वर्ग–1

1. 6 से 9 वर्ष की आयु वाले छात्रों को सत्य, शान्ति, धार्मिकता, प्रेम, आत्मसमर्पण, श्रद्धा तथा आदर जैसे गुणों से परिपूर्ण होना चाहिए।

2. 10 से 12 वर्ष की आयु वाले छात्रों में कर्म, चरित्र, निष्ठा, स्वच्छता, आदि गुणों का विकास होना चाहिए।

वर्ग–2

13 से 17 वर्ष की आयु वाले छात्रों में धैर्य, विवेक, क्षमाशीलता, निःस्वार्थता आदि गुणों का विकास होना चाहिए।

वर्ग–3

17 वर्ष से अधिक आयु के छात्रों में शिष्टाचार, समाजसेवा, सहानुभूति, आध्यात्मिकता, आत्मनियंत्रक, आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति, सादा जीवन उच्च विचार, देशभक्ति आदि गुणों का विकास होना चाहिए।

आचार्य रजनीश (1931): आचार्य रजनीश के अनुसार शिक्षार्थी में निम्नलिखित गुण सम्मिलित होने चाहिएः

अकेले खड़े रहने की शक्ति, नया सीखने की इच्छा, अतीत के भाव मन पर न रखना, नयी खोज व गुणात्मक बुद्धि से परिपूर्ण, ज्ञान का पिपासु, विवेकी, आज्ञाकारी, बुद्धिमत्ता।

आधुनिक – कालीन 14 संत षिक्षाविदों द्वारा षिक्षार्थी के संदर्भ में प्रतिपादित 108 महत्वपूर्ण गुण

क्र0सं0	शिक्षार्थी के गुण	संत शिक्षाविद
1	अनुशासनप्रियता	दयानन्द, एनी बेसेन्ट, विनोबा, शिवानन्द, प्रभुपाद, महर्षि महेश
2	गुरू के आदर्शों का पालन	दयानन्द, विवेकानन्द, निवेदिता, विनोबा, प्रभुपाद,
3	ब्रह्मचारी	दयानन्द, एनी बेसेन्ट, विवेकानन्द, अरबिन्दो, विनोबा, प्रभुपाद, शिवानन्द
4	धार्मिक	दयानन्द, एनी बेसेन्ट, सत्य सांई
5	समय का सदुपयोग	दयानन्द, विनोबा
6	गायत्री का उपासक	दयानन्द, चिद्भवानन्द
7	विनम्र	एनी बेसेन्ट, कर्वे
8	सहनशील	एनी बेसेन्ट, विवेकानन्द
9	नैतिक	एनी बेसेन्ट, अरबिन्दो
10	स्वस्थ (मन व शरीर)	विवेकानन्द, अरबिन्दो, प्रभुपाद
11	सत्य का खोजी	विवेकानन्द, शिवानन्द
12	इन्द्रियों पर नियंत्रण	विवेकानन्द, प्रभुपाद
13	राष्ट्रप्रेमी	निवेदिता, अरबिन्दो, सत्य सांई
14	मानवतावादी	निवेदिता,, विनोबा, चिद्भवानन्द
15	स्वाध्यायी	अरबिन्दो, विनोबा
16	आत्म नियंत्रण	विनोबा, चिद्भवानन्द, सत्यसांई
17	सेवाभाव	विनोबा, प्रभुपाद, सत्यसांई
18	समायोजन करने वाला	विनोबा, शिवानन्द
19	अध्यात्मिक	विनोबा, प्रभुपाद, शिवानन्द, चिद्भवानन्द
20	सम्मान करने वाला	चिद्भवानन्द, सत्य सांई
21	विनम्र	एनी बेसेन्ट, कर्वे, चिद्भवानन्द
22	दयावान	दयानन्द
23	उदार	दयानन्द
24	आत्माभिमानी	एनी बेसेन्ट
25	राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय भाव	एनी बेसेन्ट
26	परिश्रमी	कर्वे
27	आत्मविश्वासी	कर्वे
28	धैर्यवान	कर्वे
29	स्वाभिमानी	कर्वे
30	वाचन पालक	कर्वे

31	इच्छाओं का त्याग करने वाला	विवेकानन्द
32	ईमानदार	विवेकानन्द
33	आदर्शवादी	विवेकानन्द
34	आत्मनिर्भर	विवेकानन्द
35	सौन्दर्य प्रेमी	अरबिन्दो
36	कल्पना शक्ति	अरबिन्दो
37	विचारशक्ति	अरबिन्दो
38	खोजकर्ता	अरबिन्दो
39	निरीक्षणकर्ता	अरबिन्दो
40	विश्लेषणकारी	अरबिन्दो
41	सूक्ष्मदर्शी	अरबिन्दो
42	प्रश्न करने वाला	अरबिन्दो
43	संयमी	विनोबा
44	सदाचारी	विनोबा
45	स्वतंत्र चितन	विनोबा
46	चरित्रवान	विनोबा, चिद्भवानन्द, सत्य सांई
47	कर्तव्यनिष्ठ	विनोबा, चिद्भवानन्द, सत्य सांई
48	स्वतंत्र व्यक्तित्व	जे0 कृष्ण मूर्ति
49	तार्किक बुद्धि	जे0 कृष्ण मूर्ति
50	सुसंस्कृत	जे0 कृष्ण मूर्ति
51	मुक्त चिंतन	जे0 कृष्ण मूर्ति
52	क्रियात्मक सृजनशीलता	जे0 कृष्ण मूर्ति
53	आज्ञाकारी	जे0 कृष्ण मूर्ति
54	विद्यालय प्रेमी	जे0 कृष्ण मूर्ति
55	शिक्षक प्रेमी	जे0 कृष्ण मूर्ति
56	कृष्ण चेतना से पूर्ण	प्रभुपाद स्वामी
57	आज्ञाकारी	चिद्भवानन्द, रजनीश
58	संयमी	चिद्भवानन्द
59	एकाग्र स्मृति	चिद्भवानन्द
60	संतुलित भोजन	चिद्भवानन्द
61	साहसी	चिद्भवानन्द, सत्यसांई
62	ध्यान योग साधना वाला	महर्षि महेश
63	रचनात्मक बुद्धि	महर्षि महेश
64	मौलिक बुद्धि	महर्षि महेश
65	सादा जीवन	सत्य सांई
66	उच्च विचार	सत्य सांई
67	नई खोज करने वाला	रजनीश
68	ज्ञान का पिपासु	रजनीश

69	तन व मन से अध्ययनरत् रहने वाला	दयानन्द
70	विवेकशील	रजनीश
71	शारीरिक स्वच्छता पर ध्यान	शिवानन्द
72	दृढ़ संकल्पी	शिवानन्द
73	वेदों का अध्ययन करने वाला	दयानन्द
74	स्वार्थरहित	दयानन्द
75	वैचारिक, शाब्दिक तथा क्रियात्मक पवित्रता वाला	विवेकानन्द
76	ज्ञानेन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाला	विवेकानन्द
77	नायक की तरह सोचने की प्रवृत्ति वाला	निवेदिता
78	मानसिक स्तर को ऊँचा उठाने वाला	निवेदिता
79	संस्कृत का अध्ययन करने वाला	निवेदिता
80	ईमानदार	निवेदिता
81	स्वतंत्र	निवेदिता
82	आत्मा का विकास करने वाला	निवेदिता
83	संघर्ष की प्रवृत्ति से पूर्ण	निवेदिता
84	राष्ट्रीय व नागरिक कर्तव्यों की पूर्ति करने वाला	निवेदिता
85	बौद्धिक	एनी बेसेन्ट, अरबिन्दो
86	समर्पण भाव	अरबिन्दो
87	विद्या का अभ्यास करने वाला	विनोबा
88	माता–पिता की सेवा करने वाला	विनोबा
89	पाठ्य पुस्तकों की स्वच्छता पर ध्यान	शिवानन्द
90	हस्त, हृदय तथा मस्तिष्क का समन्वित विकास	शिवानन्द
91	उद्यमी प्रवृत्ति	शिवानन्द
92	दैनिक अध्ययन	शिवानन्द
93	प्रेरणादायी व अध्यात्मिक साहित्य को पढ़ने वाला	शिवानन्द
94	निष्काम कर्मयोगी	शिवानन्द
95	सुशील	शिवानन्द
96	कर्मठ	शिवानन्द
97	धैर्यवान	शिवानन्द
98	सत्यवादी	विवेकानन्द, शिवानन्द
99	सभ्य विचार	जे0कृष्ण मूर्ति
100	शुद्ध प्रेम से पूर्ण	चिद्‌भवानन्द
101	गहराई से समझने की शक्ति	जे0 कृष्ण मूर्ति
102	राष्ट्र को नयी दिशा प्रदान करने वाला	जे0 कृष्ण मूर्ति
103	तप करने वाला	चिद्‌भवानन्द
104	व्रत करने वाला	चिद्‌भवानन्द
105	रूढ़ियों व बुराईयों से परे	जे0 कृष्ण मूर्ति
106	समस्या समाधान की योग्यता	महर्षि महेश
107	आचरण में सुधार करने वाला	महर्षि महेश
108	गुणात्मक बुद्धि से पूर्ण	रजनीश

शिक्षार्थी में 26 विषिश्ट गुणों के सन्दर्भ में आधुनिक कालीन चौदह संत – शिक्षाविदों के शैक्षिक दृष्टिकोण के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष

- अनुशासनप्रियता – दयानन्द, एनी बेसेन्ट, विनोबा, शिवानन्द, प्रभुपाद, महर्षि महेश
- गुरू के आदर्षों का पालन – दयानन्द, विवेकानन्द, निवेदिता, विनोबा, प्रभुपाद,
- ब्रह्मचारी – दयानन्द, एनी बेसेन्ट, विवेकानन्द, अरबिन्दो, विनोबा, प्रभुपाद, शिवानन्द
- धार्मिक – दयानन्द, एनी बेसेन्ट, सत्य सांई
- समय का सदुपयोग – दयानन्द, विनोबा
- गायत्री का उपासक – दयानन्द, चिद्भवानन्द
- विनम्र – एनी बेसेन्ट, कर्वे, चिद्भवानन्द
- सहनशील – एनी बेसेन्ट, विवेकानन्द
- नैतिक – एनी बेसेन्ट, अरबिन्दो
- स्वस्थ (मन व शरीर) – विवेकानन्द, अरबिन्दो, प्रभुपाद
- सत्य का खोजी – विवेकानन्द, शिवानन्द
- इन्द्रियों पर नियंत्रण – विवेकानन्द, प्रभुपाद
- राष्ट्रप्रेमी – निवेदिता, अरबिन्दो, सत्य सांई
- मानवतावादी – निवेदिता, विनोबा, चिद्भवानन्द
- स्वाध्यायी – अरबिन्दो, विनोबा
- आत्म नियंत्रण – विनोबा, चिद्भवानन्द, सत्यसांई
- सेवाभाव – विनोबा, प्रभुपाद, सत्यसांई
- समायोजन करने वाला – विनोबा, शिवानन्द
- अध्यात्मिक – विनोबा, प्रभुपाद, शिवानन्द, चिद्भवानन्द
- सम्मान करने वाला – चिद्भवानन्द, सत्य सांई
- चरित्रवान – विनोबा, चिद्भवानन्द, सत्य सांई
- कर्तव्यनिष्ठ – विनोबा, चिद्भवानन्द, सत्य सांई
- आज्ञाकारी – चिद्भवानन्द, रजनीष
- साहसी – चिद्भवानन्द, सत्यसांई
- बौद्धिक – एनी बेसेन्ट, अरबिन्दो
- सत्यवादी – विवेकानन्द, शिवानन्द

शोधित निष्कर्षों का अध्ययन करने के पश्चात ज्ञात हुआ कि संविधान शिक्षार्थियों के लिए शिक्षा संवैधानिक अधिकार के रूप में सम्मिलित है। सभी आयोगों तथा प्रतिवेदनों आदि में शिक्षार्थी के विकास हेतु विभिन्न शैक्षिक सुविधाओं जैसे–छात्रावास, छात्रवृत्ति, परिवहन सुविधा तथा चिकित्सा सुविधा आदि के बारे में संस्तुतियां दी गयी हैं। जबकि आधुनिक कालीन 14 संत शिक्षाविदों ने शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के सामान्य, विशिष्ट व महत्वपूर्ण 108 गुणों के बारे में चर्चा की है। यदि ये गुण शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का हिस्सा न बन पाये तो प्रबुद्ध भारत का स्वप्न कैसे मूर्त रूप ले सकेगा। हमें चाहिए एक अध्यात्म से परिपूर्ण, समर्पित, योग्य तथा तितिक्षापूर्ण शिक्षार्थी जो समाज व राष्ट्र का विकास सकारात्मक दृष्टि से कर सके।

अग्रिम सोच हेतु सुझाव

आधुनिक कालीन 14 संत शिक्षाविदों द्वारा संश्लेषित व विश्लेषित शिक्षार्थी के व्यक्तित्व के 108 गुणों को पता लगा लेने के पश्चात एक ऐसा मानकीकृत परीश्रण तैयार किया जाय जो विद्यार्थी में विद्यमान गुणों को ढूढ़ सके व अपेक्षित अन्य गुणों को विकसित करने हेतु अन्तर्दृष्टि प्रदान कर सके। इसके परिणाम स्वरूप शिक्षक को गुणवत्ता परक, अध्यात्म से परिपूर्ण, समर्पित, योग्य, तितिक्षापूर्ण, वैज्ञानिक दृश्टिकोण युक्त तथा डिजिटल रूप से समर्थ शिक्षार्थी उपलब्ध हो सकेगा जो राष्ट्र की उत्पादकता व विकास में सकारात्मक सहयोग प्रदान कर सकेगा तथा भारतवर्ष एवं इसके प्रकाश–स्तम्भ स्वरुप शिक्षालयों का नाम रोशन कर सकेगा।

संदर्भ

1. *Altekar, A.S. : Education in Ancient India, Patna University, Nand Kishore & Bros., Bans Phatak (1948), Third Edition*
2. *Aitreya Arti : Educational Philosophy of Annie Besant, M.Ed. Thesis, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (1981)*
3. *Arora, Pamkaj & Sharma, Usha : Rashtriya Shiksha Neeti – Rachnatmak Sudharon ki Or, Shipra Publications, Delhi*
4. *Buch, M.B. : First Survey of Research in Education (1972)*
5. *Buch, M.B. : Second Survey of Research in Education (1976)*
6. *Buch, M.B. : Third Survey of Research in Education (1978 - 83)*
7. *Buch, M.B. : Fourth Survey of Research in Education (1984)*
8. *Buch, M.B. : Fifth Survey of Research in Education (1988 - 92)*, Vol. : 1
9. *Chauhan, B.P.S. : Educational Philosophy of Swami Dayananda, Ph.D., C.C.S. University, Meerut (1981)*

10. *Dev, Monika : Osho Rajneesh Ka Shiksha Darshan TathaBhartiya Sandarbh Mein Uski Upadeyata, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (1990)*
11. *Dutta, T.A. : A Study of the Philosophy of Vivekananda with Reference to Advaita Vedanta and Great Universal Heart of Buddha, Ph.D. (1978)*
12. *Goel, V.K. : The Educational Philosophy of Shrila Prabhupad swami – A Critical Evaluation, Dissertation, M.Ed., M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (1983 – 84)*
13. *Goswami, H.S.: An Enquiry into the Fundamentals of Educational Philosophy in the East and West, Ph.D. – Education, Kolkata University (1961)*
14. *Gupta, Anju : Bhagini Nivedita's Educational Philosophy in the Context of Modern Indian Condition, Dissertation, M.Ed., M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (1990)*
15. *Gupta, Prof. S.P. & Gupta, Dr Alka : National Education Policy – 2020 : A Simple Introduction, Sharda Pustak Bhawan, Prayagraj*
16. *Gupta, U.M. : Aurobindo Ka Siksha Darshan – Ek Alochanatmak Addhyayan, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly*
17. *Km Usha : Educational Philosophy of Aurobindo, Hindu College, Moradabad, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly*
18. *Khushdil, M. : Swami Dayananda Ka Shiksha Darshan, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly*
19. *Kumar, Rusen & Singh, Dr Rana : India's National Education Policy 2020 – An Overview, Xpress Publishing, Chennai*
20. *Mandal, Dr Keshab Chandra : National Education Policy 2020 : The Key to Development in India*
21. *Raizada, G. : Educational Philosophy of Swami Chidbhavananda, M.Ed. – Thesis. M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly*
22. *Rani, Seema : Maharshi Karve Ke Shiksha Darshan Ka Adhunik Sandarbh Mein Ek Tulnatmak Addhyayan, Dissertation – M.Ed., M.J.P. Rohilkhand University, bareilly*

23. *Sharma, Radha : The Educational Philosophy of Swami shivananda, Dissertation – M.Ed., M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly (1981)*

24. *Sharma, S.D. : The Educational Philosophy of Shri Sathya Sai – A Critical Appraisal, M.J.P. Rohilkhand University, Bareilly*